P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# समाज की सच्ची तस्वीर उद्घाटित करता उपन्यास "आधा गाँव"

**संजीत**
सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
ए0 आई0 जाट एच0 एम0 कॉलेज,
रोहतक हरियाणा

**सारांश**

साहित्यकार समाज का सबसे अधिक संवेदनशील प्राणी होता है वह अपने परिवेश और संस्कृति को समझने की परख रखता है। क्योंकि किसी भी महान रचनाकार के उदय के पीछे कोई न कोई एक संकल्प होता है जो उसकी रचनाओं में आगे चलकर विकसित होता रहता है। रचनाकार के बढते अनुभव, चिन्तन की प्रौढ़ता और युगीन दबाव विकास क्रम में कथाकार उसको सजाते संवारते और आकार देते रहते है। हाँ इतना अवश्य है कि वह किसी न किसी प्रकार अपने संकल्प की धुरी से जुड़ा रहता है। सामाजिक चिन्तन और राष्ट्रीय चेतना से जुड़े उपन्यासकारों की रचनाओं का गंभीरतापूर्वक यदि अध्ययन किया जाय तो यह बात और भी स्पष्ट हो जायेगी। राही मासूम रजा भी ऐसे ही साहित्यकार है, जो भारतीय संस्कृति के पोषक हैं और उनका सम्पूर्ण साहित्य किसी एक व्यक्ति की कहानी न कहकर उस समय की परिस्थितियों और परिवेश की कहानी बयां कर रहा है। उनका ''आधा–गाँव'' उपन्यास उत्तर प्रदेश के पूर्वाचंल के गाँवों में रहने वाले मुसलमान, जमीदारों और मध्यमवर्गीय किसानों के जीवन पर केन्द्रित हैं। गंगोली के मुसलमानों के स्वाधीनतापूर्ण समृद्ध जीवन से आरम्भ कर स्वतंत्रता के पश्चात् उनकी दयनीय स्थिति, बेगानापन, सामान्य जीवन–धारा से अलग होने और आर्थिक दृष्टि से हीन होने का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। क्योंकि लेखक स्वयं देश–विभाजन की पीडा से गुजर चुके थे। इस लिए इस उपन्यास से उन्होंने जिन पहलुओं को उजागर किया है वे निम्न है।

**मुख्य शब्द :** पूंजीपति वर्ग, सामाजिक भेद–भाव, वर्ण व्यवस्था, शोषित वर्ग, साम्प्रदायिकता आदि।

**प्रस्तावना**

साहित्यकार अपने युग की उपज होता है।क्योंकि वह विविध सामाजिक इकाईयों और संदर्भो को समेट कर उनकी ज्वलंत समस्याओं को जीवान्त स्वाभाविक एवं यथार्थ रूप चित्रित करता है। राही मासूम रजा भी अपने युग की नब्ज को पहचानने में समर्थ रहे है, बहुमुखी प्रतिभा के धनी व एक समर्थ साहित्यकार राही मासूम रजा जी ने उर्दू साहित्य में भी लेखनी चलाई है। और एक उच्च मुकाम प्राप्त किया। उनके चिंतन के संसार का प्रत्येक दृश्य अपनी ही जमीं की कोख से निकला है। इनका पहला उपन्यास ''आधा गाँव'' 1966 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने ऐसे कई उपन्यासों से साहित्य–जगत को समृद्ध बनाया। जैसे ओस की बूँद, दिल एक सादा कागज, आदि।

आधा गाँव उपन्यास में राही जी ने गाजीपुर का गंगोली गाँव, जहाँ मुसलमानों की रिहायश है, उनकी खुशहाल जिंदगी से आरम्भ कर स्वतन्त्रता के बाद की दयनीय अवस्था और अपने ही मुल्क में बेगानेपन का दंश झेल रहे समाज का मार्मिकता को दर्शाया है। ''स्वतन्त्रता के बाद पूंजीवाद का विकास हुआ है और गाँव बदले हुए और टूटे हुए, लोग अपनी जड़ और जमीन से कट चुके थे, और यही दर्द राही जी के उपन्यास आधा गाँव में व्यक्त हुआ है।'' आधा गाँव'' उपन्यास उसी आस्था का नील लोहित पुण्य है। जिससे कला और यथार्थ के प्रगाढ़ सबंधों की वैसी ही मादक गंध निकल रही है। जैसी सामाजिक संस्कृति के प्रौढ़ होने से कम से कम मध्यकाल की दो शताब्दियाँ महकती रही थी।''

राही जी ने आधा गाँव उपन्यास में सामंती समाज की रूढियों परम्पराओं, अन्धविश्वासों का सच बखूबी प्रस्तुत किया है। इस समाज में दूसरा ब्याह कर लेना या किसी गैर औरत को घर में ले आना बुरा नहीं समझा जाता था। और तत्कालीन समाज में तो स्त्री भी अनैतिक संबंध स्वीकार कर लेता था और कहते है ''मर्द है तो ताक–झाँक करेंगे ही, रखनियाँ भी रखेगे।''

यह उपन्यास जहाँ सांमती समाज की मानसिकता को दर्शाता है वही दूसरी तरफ समाज में हिंदू एवं मुस्लिम जाति में पर्याप्त सामाजिक भेद को भी उजागर करता है जहाँ स्त्री का सम्मान न होकर उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है। विधवा स्त्री का जीवन दोनों समुदायों में ही दुष्कर था।

''उन्मुल हबीबा–शादी के मौकों पर अधूत हो जाती थी। कंदूरी के फर्श पर उसकी परछाई नहीं पड़ सकती थी। दुल्हन के कपडों को वह छू नहीं सकती थी।''

राही जी ने शोषित एवं शोषक वर्ग की स्थिति उभारा है। ''रकियाने वाले लोग इतने दौलतमंद थे कि जब चाहें खड़े–खड़े पूरे गाँव को खरीद ले लेकिन ये कपडे वाली कुर्सी पर नहीं बैठ सकते थे इन लोगो के लिए लकड़ी या टिन की कुर्सी रखी जाती थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में हुई प्रगति को अस्वीकार नहीं कर सकते लेकिन यही भी सत्य है कि प्रशासन में अब भी भ्रष्टाचार का स्वार्थ का बोलबाला था। उपन्यास का पात्र ठाकुर हरनारायण वह थानेदार है जो बैखोफ होकर चंदे में धाँधली करता है।'' उपन्यास में भ्रष्टाचार के विरूद्ध जनता के आक्रोश को भी व्यक्त किया है। उपन्यास में भारत छोड़ो आन्दोलन, थाना कासियाबाद को फूँके जाने वर्णन मिलता है। ''इस मज़में में ऐसे लोग कम थे, जिन्हें हिदुंस्तान छोड़ दो, के नारे की खबर रही हो। उनमें ऐसे लोग भी नहीं थे, जिन्हें आजादी का मफटूम मालूम हो । ये लोग वे थे, जिनसे ज्यादा लगान लिया गया था। जिनका अनाज खेतों में ही छीन लिया जाता था जिनसे जबरदस्ती वारफण्ड के नाम पर थाना कासिमाबाद कई पुश्तों से रिश्वत ले रहा था।''

दूसरे पहलू से देखें तो हिन्दू–मुस्लिम एकता को दर्शाया गया है। मोहर्रम अपनी व्यापकता में गंगौली के जीवन और समाज की सारी मानसिकता, गतिविधियों को आत्मसात करता है। समाज के सभी स्तरों पर एकता सुदृढ़ थी।'' और यही एकता उस समय सार्थक दिखाई देती है जब "रजिया का जनाजा निकला तो ताबूत फुन्नन मियाँ, ठाकुर पृथ्वीपाल, झिंगुरिया और अनावसल हसन के कंधों पर था और ठाकुर कुवंरपाल सिंह का सारा परिवार जनाजे के साथ।''

गंगौली गाँव जहाँ एक तरफ एकता की मिसाल है। तो दूसरी और प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ समाज में अलगाववाद ला रहे थे। शहरों में साम्प्रदायिकता की आग भड़क रही थी परन्तु उस समय तक गंगोली गाँव सुरक्षित न था। जब बदलाव की बयार चली तो छोटे–से गाँव के कुछ बच्चे पढ़ लिखकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने अलीगढ़ जाने लगे, तब से अलगाव की प्रवृत्तियों फैलने लगी। क्योंकि अलीगढ अमीर मुस्लिमों का और लीग के प्रचार के केन्द्र था। हकीम साहब बड़े दर्द के साथ कहते है– ''ये वशीर ई पाकिस्तान त हिन्दू–मुसलमान को अलग करे को बना दिया। बाकी हम तई देख रहे कि ई मियां–बीबी, बाप बेटा और भाई–बहन को अलग कर रहा।'' अतः विभाजन का खामियाजा जनता को ही भोगना पड़ा।

**उद्देश्य**

'आधा गाँव' उपन्यास में उपन्यासकार ने विभाजनकालीन मानसिकता के विविध पक्षों को यथार्थ के धरातल पर अभिव्यक्ति प्रदान की है।उन्होंनें इस उपन्यास में साम्प्रदायिक मानसिकता परत दर परत जाँच पड़ताल और परख ने केवल तधुगीन विध्वंसकारी पस्थितियाँ में कार्यरत सकारात्मक शक्तियों को रेखांकित किया बल्कि वर्तमान परिदृश्य में साम्प्रदायिकता से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हुए राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान की है। और यह उपन्यास सर्जनात्मक लेखन का सबूत बनकर राष्ट्रीयता के हक में खड़ा हो जाता है। इस उपन्यास को पढ़कर व लेख लिखने का मेरा उद्देश्य यही है कि राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत उपन्यासकार के भाव महज किताबों में ही सिमटकर दम न तोड़े, वो एक सार्थक संदेश बनकर जन – जन तक पहुचें।

**निष्कर्ष**

अतः स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी हमारा समाज साम्प्रदायिक शक्तियों का इशिकार बना हुआ है। ये साम्प्रदायिकता इस तरह से हमारी जड़ों में समा चुकी है कि इससे मुक्ति पाना सहज नहीं है। फिर भी राही मासूम रजा ने अपने उपन्यास के माध्यम से हमारे चिंतन को प्रेरित किया है। कि हम मानवीयता और भाईचारे की ओर बढ़ें। राही जी ने आधा गाँव उपन्यास में समाज की सच्ची तस्वीर को उजागर किया है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. समाज की सच्ची तस्वीर उद्घाटित करता उपन्यास "आधा गाँव"
2. राही मासूम, रजा "आधा गाँव", राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
3. उपरिवत् पृ0 114
4. उपरिवत् पृ0 124
5. उपरिवत् पृ0 53
6. उपरिवत् पृ0 152